www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सेवा व्रत का आदर्श उपस्थित करने वाली—

# अवन्तिकाबाई गोखले



श्री सत्यभक्त
पूर्व सम्पादक चाँद, सतयुग, प्रणवीर

युग निर्माण योजना मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# ोवा व्रत का आदर्श उपस्थित करने वाली अवन्तिकाबाई गोखले

—:०:—

महात्मा गाँधी ने सन् १९१५ में अफ्रीका से भारतवर्ष आकर जब यहाँ सार्वजनिक जीवन में भाग लेना आरम्भ किया तो उनको अनुभव हुआ कि स समय सबसे अधिक आवश्यकता भारतीय किसानों की दुरवस्था का सुधार रने और उनमें जागृति उत्पन्न करने की है। यद्यपि उस समय देश में स्वराज्य न्दोलन जोर पकड़ रहा था और लोकमान्य तिलक तथा मिसेज ऐनीबेसेन्ट जैसे लब्ध नेता रा नीतिक जागृति बड़े परिमाण में फैला रहे थे, पर उनके प्रयत्न धिकांश में बड़े नगरों में रहने वाले शिक्षित-वर्ग तक ही सीमित थे। गाँवों में ने का तो कोई साहस ही नहीं करता था, क्यों कि न तो वहाँ किसी तरह की वस्थायें मिल सकती थीं, और न वहाँ की अज्ञानान्धकार में डूबी जनता को ा सकना ही सहज था।

पर गाँधीजी की कार्य प्रणाली प्रत्येक कार्य को जड़ से आरम्भ करने थी। भारतवर्ष की जड़ गाँवों में ही है। किसानों की संख्या सम्पूर्ण आबादी ८० प्रतिशत थी और वे ही लोग समाज के 'अन्नदाता' थे। पर अशिक्षा न तथा विदेशी शासन ने उनको लुंज-पुंज बना रखा था। इस बात को करकर गाँधीजी ने सबसे पहले खेड़ा और चम्पारन के 'किसान-सत्याग्रह' जैसे ान्दोलन ही आरम्भ किये।

चम्पारन में कुछ अँगरेज नील की खेती कराने का कार्य करते थे। वे स्वार्थी और अहंकारी थे और अपने सम्मुख किसी का कुछ भी महत्व ीते ही न थे। देहाती किसान तो उनकी निगाह में भेड़ बकरियों की तरह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org





ही थे। इस [illegible] बात [illegible] धमकाना, दण्ड देना, तंग करना उनका स्वभाव हो गया था। लखनऊ काँग्रेस में किसानों के एक प्रतिनिधि श्री रामकुमार शुक्ल द्वारा जब ये बातें गाँधीजी तक पहुंची और किसानों पर होने वाले अत्याचारों की कहानियाँ सुनीं, तो उन्होंने उन पीड़ित लोगों की सहायता करने का निश्चय कर लिया। वे समझते थे कि यद्यपि "निलहे गोरे" इन लोगों पर अपने स्वार्थ की दृष्टि से ही जुल्म करते रहते हैं, पर इसमें किसानों के अज्ञान, निरक्षरता तथा कितनी ही हानिकारक रूढ़ियों का दोष भी कम नहीं है। इसलिये एक तरफ तो गोरों के अन्यायों के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ किया गया और दूसरी तरफ कुछ ऐसे चुने हुए कार्यकर्ताओं को गुजरात और महाराष्ट्र प्रान्तों से बुलाया गया जो केवल सेवा भाव से बिहार के पिछड़े गाँवों में रह कर, वहाँ की समस्त असुविधायें सहन करके, साथ ही गोरों की धमकियों की परवाह न करके किसानों में सुधार का कार्य करते रहें। इन्हीं कार्यकर्ताओं में से एक अवन्तिकाबाई गोखले भी थी।

•

अवन्तिका बाई बम्बई की रहने वाली सुशिक्षित, सुसभ्य महिला थी, जो विलायत जाकर अँगरेजों की सामाजिक प्रथाओं का अच्छा अनुभव प्राप्त कर चुकी थी। उसका पति श्री बबनराव इंगलैण्ड में ५ वर्ष तक एक अंगरेज परिवार में रहा था, और वे लोग उसकी योग्यता और सज्जनता को देख कर उसके साथ अपनी एक लड़की का विवाह करने को तैयार थे। बम्बई में वे एक बढ़िया मकान में रहते थे जिसमें बिजली और गैस आदि की सब सुविधायें प्राप्त थीं। और बिहार के जिन गाँवों में उनको कई महीने रहना था उनमें एक अच्छी लालटैन का मिल सकना भी कठिन था। पर गाँधी जी का आदेश मिलते ही वे दोनों पति-पत्नी चम्पारन के लिये चल पड़े। अब तक वे सदैव सैकिण्ड क्लास में सफर किया करते थे, पर इस बार गाँधीजी के बुलाने पर जा रहे थे, इस लिये थर्ड क्लास में ही सवार हुए। महात्माजी के पास पहले से ही खबर पहुंच गई थी, इस लिये उन्होंने कुछ लोगों को उनको लाने को भेजा, जिनमें देवदास गाँधी ( महात्माजी के सबसे छोटे पुत्र ) भी थे। वे कहने लगे कि अवन्तिका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



बाई तो दूसरे दर्जे में आयेंगी। महात्माजी ने कहा— 'अगर वे तीसरे दर्जे में आयेंगी तो उन्हें यहाँ रखूँगा, वरना बम्बई को ही वापस भेज दूँगा।" गाड़ी रात के एक बजे आती थी। देवदास ने अवन्तिका बाई को दूसरे दर्जे के डिब्बे में ही ढूँढ़ा और जब वे न मिलीं तो कुछ देर बाद वापस चले आये। पर अवन्तिका बाई अपने पति के साथ इससे पहले ही तीसरे दर्जे से उतर कर गाँधी जी के पास पहुंच कर एक कमरे में ठहर गई थी। देवदास ने महात्मा जी से कहा कि "अवन्तिका बाई तो इस गाड़ी से नहीं आई।" यह सुनकर सब लोग हँसने लगे और महात्माजी ने कहा—"मैंने तो पहले ही कहा था कि अवन्तिका बाई तीसरे दर्जे में आयेगी।"

महात्मा गाँधी में मनुष्य के अन्तःकरण को पहिचानने की विलक्षण शक्ति थी। इसी के बल पर उन्होंने उस "अँगरेजियत" के दौरदौरा के युग में ऐसे व्यक्तियों को ढूँढ़कर निकाल लिया, जिन्होंने बिना किसी आनाकानी के तुरन्त अपने वैभवशाली जीवन क्रम का त्याग कर दिया और रेशम के स्थान पर मोटा खद्दर पहिन कर जन-सेवा के कार्य में संलग्न हो गये। अवंतिका-बाई भी गाँधीजी की इस कसौटी पर खरी उतरी। उसका जीवन उद्देश्य जन सेवा ही था और जब उसने गाँधी जी के सिद्धान्तों की वास्तविकता को समझ लिया तो स्वयं तदनुसार परिवर्तित होने में देर न लगाई।

## निरक्षर से विदुषी कैसे बनी ?

अवन्तिका बाई का जन्म सन् १८८२ में इन्दौर में हुआ था। उस समय तक स्त्री शिक्षा का प्रचार बहुत कम हुआ था। उनके पिता श्री विष्णुपंत जोशी इन्दौर में रेलवे कर्मचारी थे। वे पक्के ईमानदार व्यक्ति थे। जिस कार्य में दूसरे लोगों ने लाखों रुपये की कमाई कर ली उसमें वे एक पैसा भी 'ऊपरी आमदनी" का लेना बुरा समझते थे। पर वैसे वे पुरानी परम्परा के अनुयायी थे और उन्होंने अवन्तिका बाई का विवाह नौ वर्ष की आयुमें ही कर दिया। उधर अवन्तिका बाई के पति बबनराव का घर सुधारक विचारों का था। इस लिए उसमें एक निरक्षर लड़की का सम्मानपूर्वक निर्वाह हो सकना कठिन ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


था। मराठी तो कामचलाऊ उसकी सासने ही पढ़ा दी। पर कुछ साल बाद जब बबन राव इन्जीनियरिङ्ग कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करके अधिक अनुभव प्राप्त करने के लिए बिलायत गये तो उन्होंने कहा कि अगर मेरे प्रवास-काल में अवन्तिका बाई ने अंगरेजी न सीखली तो मैं विलायत से किसी अंगरेज लेडी को विवाह करके ले आऊँगा। इस बात का प्रभाव अवन्तिका बाई पर ऐसा पड़ा कि उसने एक-दो वर्ष में ही अच्छी तरह अंग्रेजी सीख ली।

जब बननराव इंगलैंड और चीन में सात वर्ष काम करके भारत वापस आये तो एक मशीन सम्बन्धी दुर्घटना में अगूंठों को छोड़कर उनके हाथों के पंजे कट गये थे। इंगलैंड की कम्पनी फिर भी उनसे काम करते रहने का बहुत आग्रह कर रही थी, पर घर वालों के कहने-सुनने से उनको रुक जाना पड़ा। वे यन्त्र-विद्या में बहुत होशियार थे और इस लिए बम्बई रह कर भी काफी व्यवसाय चला सके। तो भी भविष्य का ख्याल करके उन्होंने अवन्तिका बाई को नर्स की शिक्षा प्राप्त करने की सम्मति दी। तदनुसार बम्बई के "मोटलबाई अस्पताल" में उनको भर्ती कराया गया। यद्यपि 'शिक्षणालय' के नियमानुसार उनकी आयु दो-तीन वर्ष कम थी, पर किसी प्रकार अधिकारियों को राजी कर लिया गया। "नर्सिङ्ग" कार्य उस समय विशेष रूप से योरोपियन और ऐंग्लो इंडियन स्त्रियाँ ही करती थीं। इस लिए शिक्षणालय में सिर्फ छः-सात हिन्दू लड़कियाँ थीं। हिन्दू लड़कियों को मराठी में और योरोपियनों को अंगरेजी में शिक्षा दी जाती थी। अवन्तिकाबाई को पहले "मराठी-विभाग" में ही रखा गया, पर कुछ समय पश्चात् उसकी योग्यता देखकर उसे "अंगरेजी-विभाग" में बदल दिया। एक वर्ष तक ट्रेनिङ्ग प्राप्त करके उसने परीक्षा दी और प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई। कुछ समय बाद ही घर में उसकी चचेरी सास को प्रसव हुआ और उस कार्य में उसने अपनी योग्यता प्रमाणित कर दी।

भारतीय स्त्रियाँ इतना समय बीत जाने पर भी, अभी तक 'नर्स' के कार्य की महत्ता को नहीं समझ सकी हैं, और जो कोई इस कार्य को करती हैं उन्हें हीनता की दृष्टि से देखती हैं। विदेशों में मिस नाइटिंगिल जैसी विदुषी महिला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


ने सौ वर्ष से भी पहले अपने उच्च परिवार की शान-शौकत और बड़प्पन को त्याग कर 'नर्सिङ्ग' के पेशे में पदार्पण किया था और हर तरह से स्वार्थ-त्याग करके उसे एक सम्माननीय कार्य का रूप दिया था। पर भारतवर्ष में सभ्य-समाज के कहलाने वाले अधिकांश स्त्री-पुरुष, नर्सिंग का लाभ उठाते हुए भी उसे "इज्जत" का पेशा नहीं समझते। ऐसी दशा में बबनराव और अवन्तिका बाई का कार्य निस्सन्देह प्रशंसनीय था कि उन्होंने ब्राह्मण जैसे उच्च वर्ण और सम्पन्न परिवार के होते हुये भी आज से सत्तर वर्ष पूर्व नर्सिङ्ग की शिक्षा प्राप्त की। यद्यपि घर की स्थिति के कारण उनको नर्स की नौकरी नहीं करनी पड़ी, पर उसने दीनजनों की सेवा में इसका बहुत उपयोग किया। चम्पारन में भी महात्मा गांधी ने उसे सबसे पहले यही सोचकर बुलाया था कि वह ग्रामीण स्त्री-पुरुषों तथा बालकों की सेवा करके उनको स्वास्थ्य सम्बन्धी सहायता देकर अपनी तरफ आकर्षित कर सकती है। फिर इसी गुण के कारण वह बम्बई की सुप्रसिद्ध संस्था 'सेवा-सदन' की भी एक प्रमुख कार्यकर्त्ता बन गईं।

इसमें सन्देह नहीं कि सेवा भावी महिलाओं के लिये 'नर्सिङ्ग' की शिक्षा बहुत अधिक उपयोगी है। नर्स' का कार्य विदेशों में इतना सम्मान जनक समझा जाता है कि बड़े-बड़े लोग भी उनका आदर करते हैं और किसी भी सामाजिक समारोह में उनको प्राथमिकता दी जाती है। यदि जीवन निर्वाह के धन्धे के रूप में काम करने वाली नर्सों का इतना महत्व है, तो जो समाज-सेविका निस्वार्थ भाव से, असहाय पीड़ित जनों के कष्टों का मोचन करने की भावना से इस कार्य को करेगी उसकी पूजा—प्रतिष्ठा कौन नहीं करेगा।

## सेवा कार्य का व्यवहारिक रूप—

जिस समय अवन्तिकाबाई 'नर्सिङ्ग' का कोर्स पढ़ रही थी, उस समय बात-चीत होते-होते किसी डाक्टर ने कहा कि "नर्सिंग"—कार्य में योरोपियन महिलायें जितनी कुशल, साहसी और संलग्नता से कार्य करने वाली होती हैं, उतनी हिन्दू स्त्रियाँ हो ही नहीं सकतीं।" अवन्तिका बाई ने उसी समय उत्तर दिया कि यदि कोई अवसर आया तो मैं सिद्ध कर दूंगी कि इस दृष्टि से भारतीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



महिलायें किसी प्रकार कम नहीं है। संयोग से एक ही वर्ष बाद बम्बई में चेचक की बीमारी बड़े भयंकर रूप से फैली और सैकड़ों मौतें होने लगीं। अस्पताल रोगियों से भर गये। अवन्तिकाबाई उस समय व्यारा नामक स्थान में जो बड़ौदा ( गुजरात ) में है, अपने पति के साथ दियासलाई के सर्व प्रथम भारतीय कारखाने का संचालन कर रही थी। उस डाक्टर ने वहीं पत्र भेजकर अवन्तिका बाई को बम्बई आने और चेचक के मरीजों की सेवा करके अपने शब्दों को चरितार्थ करने के लिए सूचित किया। यद्यपि उस समय बम्बई में चेचक ने बड़ा भयंकर और घातक रूप धारण कर रखा था और उसकी छूत से बड़े-बड़े डाक्टर घबड़ाने लगे थे। पर अवन्तिका बाई निर्भय होकर कार्य क्षेत्र में कूद गई और छः महीने तक ऐसी तत्परता से चेचक के मरणासन्न रोगियों की सेवा करती रही कि अस्पताल के बड़े डाक्टर भी दंग रह गये। उसके परिश्रम और कुशलता से बहुसंख्यक व्यक्तियों की प्राण रक्षा हो सकी। उसको चुनौती देने वाले डाक्टर साहब का तो कहना ही क्या। उन्होंने मुक्त-कंठ से अपनी भूल और अवन्तिका बाई की श्रेष्ठता स्वीकार की। इस प्रकार उन्होंने स्वयं अपने को संकट में डाल कर भी भारतीय महिलाओं को कीर्ति को बढ़ाया।

## पति की सेवा—

बबनराव ने दियासलाई का कारखाना उस युग में लगाया था जब भारत में स्वदेशी आन्दोलन आरम्भ नहीं हुआ था और छोटी बड़ी सभी चीजें विदेशों से बनकर आती थीं। पर बबनराव और बड़ौदा के महाराज सयाजी राव दोनों को देश से प्रेम था और वे भारतीय उद्योग-धन्धों की उन्नति की अभिलाषा करते थे। महाराज बड़ौदा बबनराव से मित्रवत् व्यवहार करते थे और कभी-कभी व्यारा आकर उनके कार्य का निरीक्षण करते थे। जब उनको मालूम हुआ कि व्यापार सम्बन्धी कार्य से बबन राव के बाहर चले जाने पर कारखाने की देखभाल और व्यवस्था अकेली अवन्तिका बाई करती है तो महाराज बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा कि "अगर भारतीय महिलायें इसी तरह अपने पति के कन्धे से कन्धा मिलाकर जीवन के हर क्षेत्र में काम करती रहीं, तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



भारत थोड़े ही दिनों में स्वतन्त्र हो जायगा और उसकी गुलामी दूर हो जायगी।'

बबनराव ने डाइनाइट का विस्फोट करके मछलियों को पकड़ने का एक नया तरीका निकाला था। एक दिन उसका प्रयोग करते हुए उनका हाथ बहुत घायल हो गया। खबर मिलते ही अवन्तिका बाई उनके पास पहुंची और उसी समय अपनी साड़ी में से कपड़ा फाड़कर घाव को बाँध दिया जिससे खून का बहना बन्द हो गया। फिर वह उनको लेकर सूरत गई और एक प्रसिद्ध डाक्टर से हाथ का आपरेशन कराया। डाक्टर ने अवन्तिकाबाई की कम उम्र को देख कर (वह उस समय लगभग २० वर्ष की ही थी) ख्याल किया कि यह आपरेशन होते देखकर घबड़ा जायगी। इस लिए उन्होंने कहा कि आप इस समय बाहर जाकर बैठ जायें। पर अवन्तिका बाई ने उत्तर दिया—"डाक्टर, आप इसके लिए चिन्ता न कीजिये। मैंने नर्सिङ्ग-कोर्स पूरा किया है। पिछले ४८ घण्टों में मैंने ही इनकी मरहम पट्टी की है। आप आपरेशन का काम कीजिये, मैं इनकी नाड़ी देखती रहूँगी।"

आपरेशन के बाद जब सब कोई घर आये और पहली बार अवन्तिका बाई ने अपने हाथ से बबनराव को बच्चे की तरह खाना खिलाया, तो उनको यह ख्याल आया कि अब मैं कितना पराश्रित हो गया। चीन में हाथ की अँगुलिरां कट गईं और अब दाहिना हाथ कलाई पर से अलग हो गया। इस पर अवन्तिका बाई ने कहा—आपकी अँगुलियां चली गयी तो मेरी तो दसों अँगुलियाँ मौजूद हैं। मेरे रहते आपको किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकेगी।"

हमारे देश के पुराने ख्यालात के लोग प्रायः कहा करते हैं कि अँग्रेजी पढ़-लिखकर स्त्रियां स्वच्छन्द हो जाती हैं और पतियों की पर्वाह नहीं करतीं। पश्चिनीय औरतों की तो वे सदा बुराई किया ही करते हैं। उनके कथनानुसार अँगरेजी ढंग की पढ़ाई से स्त्रियों में से श्रद्धा, भक्ति, पति सेवा आदि का भाव मिट जाता है और वे भारतीय आदर्श से गिर जाती हैं। पर अवन्तिका बाई ने अपने उदाहरण से सिद्ध कर दिया कि इस प्रकार का आक्षेप निराधार है। अँगरेजी पढ़ कर और बिलायत जाकर भी स्त्री पूरी तरह पतिव्रता रह सकती है, और अपने सेवा भाव से घर के सब लोगों को सन्तुष्ट कर सकती है। शिक्षा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



और अनुभव के द्वारा किसी का पतन नहीं हो सकता। यदि कोई अनुचित मार्ग पर चलता है तो इसे उसका व्यक्तिगत दोष ही समझना चाहिये।

आगे चलकर जब दियासलाई का कारखाना बन्द करके बबनराव बम्बई चले गये, तब अवन्तिका बाई ने डेढ़ वर्ष तक नर्सिङ्ग का कार्य करके उनकी आर्थिक चिन्ताओं को भी मिटाया। उस समय उसकी आमदनी ३०० रु० मासिक थी, जिसे आज कल के भावों से तीन हजार तो माना ही जा सकता है। जीवन के अन्तिम समय तक वे पति को अपने हाथ का भोजन बनाकर खिलाती रहीं। मृत्यु के कुछ पहले कैंसर के कारण रोग शैया पर पड़ जाने पर ही उनका यह कार्य बन्द हुआ।

## समाज-सेवा का व्रत—

सन् १९१३ में इंगलैण्ड यात्रा के अवसर पर प्रतिष्ठित घरों की महिलाओं के समाज सेवा के कार्यों को देखकर अवन्तिका बाई ने अपना जीवन इसी उद्देश्य के लिए खर्च करने का निश्चय कर लिया था। वहाँ से स्वदेश आते ही "भारत सेवक समिति" ( सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी ) के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री देवधर की प्रेरणा से वे बम्बई की प्रसिद्ध संस्था "सेवा-सदन" में कार्य करने लगीं। उसी समय बड़ोदा की महारानी पद्मावती ने उनको अपने पास सहचरी की हैसियत से रहने को बुलाया था, पर सेवा व्रतधारी अवन्तिकाबाई ने इस "राजसी-जीवन" को दूर से ही नमस्कार कर लिया।

सेवा-सदन में सबसे पहले वह स्त्री-शिक्षा का कार्य करने लगीं। पढ़ाने की विधि उन्होंने देवधर जी से ही सीखी और कुछ समय बाद स्वतन्त्र रूप से स्त्रियों को अँगरेजी पढ़ाने लगीं। पर उनका विशेष ध्यान मजदूरों की तरफ था। उन्होंने विलायत की मजदूर बस्तियों में इस प्रकार के सेवाकार्य को देखा था, इस लिए वे भी प्रति सप्ताह बम्बई को लाल बाग स्थित मजदूर बस्ती में जाकर तीन घण्टे मजदूरों को सफाई और स्वास्थ्यप्रद रहन-सहन की शिक्षा देती थीं। वे स्त्रियों को शिशु-पालन का सही तरीका समझातीं। अछूतों की दुर्दशा उनको बड़ी दुःखदायी प्रतीत होती थी। इस लिए प्रायः उनके मुहल्ले में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


जाकर उनकी दशा का अवलोकन करतीं और जिस प्रकार होता उनकी सहायता को तत्पर रहतीं। मकर संक्रांति के त्यौहार पर, जिसे महाराष्ट्र में "हल्दी कूंक" कहते हैं, वे हरिजनों मुहल्ले में जाकर उनकी स्त्रियों को हल्दी-रोरी देतीं और सबको तिल के लड्डू बाँटतीं।

अछूतों की समस्या अभी तक सुलझ नहीं रही है। महात्मा गाँधी के अपार त्याग और कष्ट सहन के परिणाम स्वरूप आजकल अछूतों को कुछ कानूनी अधिकार मिल गये हैं और छोटी बड़ी सरकारी नौकरियों में भी वे कुछ स्थान पा जाते हैं, पर अभी तक सामाजिक भेदभाव के व्यवहार में, जो उनके साथ पुराने समय से होता आया है, अधिक अन्तर नहीं पड़ा है। शिक्षित जनों का एक भाग चाहे छूआछूत की व्याधि से कुछ मुक्त हो गया है, ग्रामीण और अशिक्षित जनता जिसकी संख्या सौ में से अस्सी के लगभग है, अभी तक बहुत कम बदली है। अवन्तिकाबाई के लिये यह बड़े गौरव की बात थी कि उसने आज से पचास-साठ वर्ष पहले अछूतों के साथ भाई-चारे का व्यवहार करके, लोगों का ध्यान इस महत्त्वपूर्ण समस्या की तरफ आकर्षित किया।

## शिशु-पालन गृह की स्थापना—

कारखानों में जाने वाली मजदूर स्त्रियाँ काम पर जाते हुये अपने छोटे बच्चों को अफीम खिलाकर घरों में बन्द कर जाती थीं, जिससे वे बीच में उठकर रोयें नहीं। यह प्रथा बड़ी हानिकारक थीं और इससे बच्चे आरम्भ से ही सुस्त, निस्तेज और अकर्मण्य से हो जाते थे। अवन्तिकाबाई ने मजदूर स्त्रियों को समझाया कि इस प्रकार अपने हाथ से अपनी सन्तान का अनहित करना बड़ा अनुचित है। वे स्त्रियाँ भी इस बात को मान गईं, पर प्रश्न था कि वे यदि अफीम न दें तो पीछे से बच्चों की देखभाल कौन करे? अवन्तिकाबाई ने इसका भार अपने ऊपर लिया और कुछ उदार सज्जनों की सहायता से एक "शिशु-पालन-गृह" स्थापित कर दिया। अनेक उच्च पदाधिकारी अँगरेज महिलायें भी इस कार्य में सहयोग देती थीं। ऐसे "शिशु पालन गृहों" को अँगरेजी में "क्रेश" कहते हैं और विदेशों के सभी बड़े कारखानों में, जहाँ स्त्रियां मजदूरी करती हैं,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



इस प्रकार की व्यवस्था रहती है। यद्यपि अवन्तिकाबाई की योजना कुछ वर्ष ही चल सकी, फिर गांधीजी के आन्दोलन में कूद पड़ने के कारण, उसे बन्द कर देना पड़ा, पर इसने अन्य कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया और अब देश के बड़े कारखानों में ऐसे "शिशु-पालन-गृह" कारखानेदारों की तरफ से ही खोल दिये गये हैं। इनमें माताओं के काम पर चले जाने पर बच्चों की देखभाल, सफाई, खिलाना, पिलाना, उनके वस्त्रों को धोकर ठीक कर देना आदि सब कार्य वहाँ के कार्यकर्ताओं द्वारा ही किये जाते हैं। मजदूरों तथा अछूतों आदि के लिये छोटे नगरों में इस तरह के सहायता कार्य करने की अब भी बड़ी आवश्यकता है और सेवा भावी स्त्री-पुरुष इस पुण्य-कार्य में सहयोग देकर अपने जीवन को सार्थक कर सकते हैं।

## हिन्द महिला समाज—

गाँधीजी के कार्यक्रमों में भाग लेने का एक परिणाम यह हुआ कि समाज-सेवा के सम्बन्ध में भी उनका दृष्टिकोण बदल गया। यद्यपि वे आरम्भ से ही गरीबों की सेवा की अभिलाषा रखती थीं, क्योंकि सेवा के वास्तविक पात्र वे ही होते हैं, पर जिन संस्थाओं से वे सम्बन्धित थीं, उनकी अन्य सदस्याओं का दृष्टिकोण कुछ भिन्न था। उनमें से अधिकांश धनिक वर्ग की ही थीं, और वे इस "सेवा कार्य" को कुछ अंशों में एक फैशन के ढंग पर करती थीं। जिस प्रकार इंगलैण्ड के महिला क्लबों में धनी घरों की स्त्रियाँ तरह-तरह के मनोरंजनों, खेल कूद और गप्पें लड़ाने में समय बिताया करती हैं, वही हालत प्रायः बम्बई की सेवा संस्थाओं की थी। गरीबों की तो बात क्या, मध्यम श्रेणी की स्त्रियाँ भी उनकी सदस्या नहीं बन सकती थीं।

यह देखकर चम्पारन से वापस आते ही सन् १९१८ में अवन्तिकाबाई ने उद्योग करके "हिन्द महिला समाज" के नाम से एक नई संस्था की स्थापना की जिसका उद्देश्य मध्यम श्रेणी की महिलाओं को कार्य क्षेत्र में लाना था। चम्पारन की किसान और बम्बई के मजदूर-वर्ग की स्त्रियों में काम करने से उन्हें यह अनुभव हुआ कि यहां की सामान्य स्त्रियों का स्वभाव अपने परिवार और जाति के स्वार्थ तक सीमित रहता है। इससे आगे बढ़कर समाज और देश की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


समस्याओं को समझने या इसके लिए कुछ कर सकने की रुचि उनमें नहीं पाई जाती। इस लिये उन्होंने 'हिन्द महिला समाज' का संगठन इस तरह तैयार किया कि सभी वर्ग की महिलायें उसमें भाग ले सकें। जिस दिन इस संस्था की स्थापना की गई उसी दिन बम्बई की कई हजार मध्यम श्रेणी की महिलाये उसमें उपस्थित हुईं और उन्होंने उसके कार्यों में सब तरह से सहायता देने की अभिलाषा प्रकट की। अवन्तिकाबाई ने श्री जयकर की माता सोनाबाई को 'समाज' की अध्यक्षा बनाने का विचार प्रकट किया, पर सोनाबाई ने कहा कि मेरे जैसी वृद्धा से यह काम ठीक ढंग से नहीं चलाया जा सकेगा. इसके लिये किसी कर्मठ और उत्साही युवती को ही चुनना चाहिये। उसने स्वयं अवन्तिकाबाई को ही अध्यक्ष बनाने का सुझाव दिया और सभा ने सर्व सम्मति से उसे स्वीकार किया। तब से जीवन के अंन्तिम दिन तक वे ही उस पद पर काम करती रही। इस 'समाज' के कार्य क्रम का सारांश इन शब्दों में मिल सकता है—

"स्त्री-समाज में परस्पर स्नेह और सहयोग की भावना उत्पन्न करना, शिक्षा का प्रचार, स्त्री जाति के सम्मुख पारस्परिक सहायता तथा सद्भावना का आदर्श उपस्थित करना, महिलाओं में साहित्य के लिए प्रेम बढ़ाना और इसके लिये पुस्तकालय तथा वाचनालय खोलना, विद्वान वक्ताओं के व्याख्यान कराना, प्रवचन, कीर्तन आदि द्वारा ज्ञान का प्रसार करना, वाद-विवाद ( डिबेट ) की प्रतियोगिता की व्यवस्था करना, विविध कलायें सिखाना, स्वदेशी अर्थ-शास्त्र समझाना, इत्यादि।"

पर जब 'समाज' की तरफ से एक वाचनालय खोला गया तो उसमें समाचार पत्र तथा पुस्तकें पढ़ने कोई स्त्री नहीं आती थी। उस समय यह एक निराली बात समझी जाती थी कि स्त्रियाँ वाचनालय में जाकर अखबार पढ़ें। उनके पति भी इसके विरुद्ध थे। अगर कोई स्त्री संयोगवश वहाँ चली जाती तो उस पर डाट-फटकार पड़ती थी। यह देखकर अवन्तिकाबाई ने एक नया तरीका यह निकाला कि वह मिशनरी महिलाओं की तरह 'चालों' ( सामूहिक निवास स्थानों ) में अखबार और पुस्तकें लेकर घूमतीं और स्त्रियों को पढ़ने को दे आतीं। अथवा किसी कमरे में बैठकर आसपास की दस-बीस स्त्रियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



को इकट्ठा कर लेतीं और उनको अखबार और पुस्तकें पढ़कर सुनातीं। इस प्रकार जो कार्य हम झोला पुस्तकालयों" द्वारा आज कर रहे हैं, वैसी ही कार्य प्रणाली अवन्तिकाबाई ने पचास वर्ष पहले अपनाई थी और आरम्भ में निराशा हाथ लगने पर भी छः महीने में उसे सफल बनाकर दिखा दिया था।

फिर एक "व्याख्यान माला" की योजना की गई उसमें स्त्रियों द्वारा राष्ट्रीय कार्य किये जाने के सम्बन्ध में प्रतिमास किसी बहुत बड़े विद्वान का भाषण कराया जाता था। इसमें लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, मालवीय जी जैसे महान् नेताओं के भी भाषण हुए। इनका प्रभाव महिलाओं पर बहुत अधिक पड़ा और उनमें से आगे बढ़कर असहयोग तथा सत्याग्रह आन्दोलनों में भाग लेने लगीं। सन् १९३० के कानून-भंग आन्दोलन में तो उन्होंने इतना काम किया कि देश में चारों ओर उनकी प्रशंसा होने लगी। इस दृष्टि से अवन्तिकाबाई का कार्यक्रम भी महात्मा गाँधी के स्वतन्त्रता-संग्राम का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया।

जब काँग्रेस की तरफ से लो० तिलक के स्मारक रूप में एक फण्ड जमा किया जाने लगा तो समाज की संस्थाओं ने ३९०० रु० जमा करके महात्माजी को दिया। उस समय गाँधीजी ने कहा कि "इस ३९०० में से १६००) तो मेरी बहन अवन्तिकाबाई ने ही दिए हैं। दानदाताओं की सूची में १००) रु० देने वाले नाम भी बहुत कम दिखाई पड़ते हैं। मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि लोकमान्य के प्रति महाराष्ट्र में इतनी उदासीनता होगी।" महात्माजी के इतना कहते ही महिलाओं की तरफ से नोट और गहनों की वर्षा होने लगी और कुछ ही मिनटों में ४००० रु० इकट्ठा हो गया।

"हिन्द महिला समाज" ने कांग्रेस के सूत कातने तथा खादी बुनने के कार्य में भी अच्छी प्रगति करके दिखाई। इसमें कुछ सूत कात कर तैयार किया जाता था और कुछ साबरमती तथा बेलगांव आदि से भी मँगाया जाता था। अवन्तिकाबाई ने आरम्भ में दो-तीन बुनाई के करघे स्वयं चलाये, बम्बई के कितने ही मुहल्लों में फेरी लगा कर खादी का प्रचार भी किया।

## प्रत्येक सत्कार्य में सहायता—

फिर भी "हिन्द महिला समाज" का मुख्य ध्येय स्त्रियों में शिक्षा प्रचार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


करना और सार्वजनिक सेवा के अवसरों पर उनमें यथाशक्ति सहयोग देना ही था। उसमें अँग्रेजी, मराठी और हिन्दी पढ़ाने की बहुत अच्छी व्यवस्था थी पर फीस नाम मात्र को ही ली जाती थी। वे लोग केवल बम्बई में ही शिक्षा कार्य नहीं करते थे, वरन् और भी अनेक छोटे नगरों में उनकी तरफ से साक्षरता प्रचार का कार्य बड़ी संलग्नता से किया जाता था। इसके द्वारा स्त्रियों को सिलाई, काढ़ना और चित्रकला का कार्य भी सिखाया जाता था और कुछ समय पहले तक इन कक्षाओं में एक हजार से भी अधिक महिलायें उद्योग-धन्धों की शिक्षा-प्राप्त करके स्वावलम्बी जीवन व्यतीत करती थीं।

जब कभी कोई राष्ट्रीय या सामाजिक कार्य सम्मुख उपस्थित हुआ तो 'हिन्द महिला समाज' की सदस्याओं ने उसमें उल्लेखनीय सहयोग दिया। इसका वर्णन करते हुए उनके जीवन चरित्र में कहा है—

"जब कभी परोपकार या राष्ट्रीय कार्य के लिये आर्थिक सहायता की आवश्यकता होती थी तो अवन्तिकाबाई अपनी 'समाज' की बहिनों को साथ लेकर उस कार्य में अग्रसर रहतीं। "मलाबार सहायता-निधि" 'गुजरात-ज़ल प्रलय-निधि", "कमला नेहरू-निधि" "सावरकर-बन्धु-निधि", "शिवाजी-स्मारक निधि" में उन्होंने इस प्रकार हजारों रु० जमा करके दिये थे। गरीबों को कपड़े का प्रबन्ध, गरीब प्रसूता स्त्रियों को पौष्टिक खुराक की व्यवस्था आदि कार्य वह हमेशा करती रहती थी। तलेगाँव के जनरल अस्पताल की स्त्रियों को दूध और बच्चों को कपड़े देने का कार्य उनके बाद भी वर्षों तक चलता रहा। हरिजन सेवा से तो उनको विशेष प्रेम था। इस काम में उन्होंने समाज की दूसरी महिलाओं को भी प्रेरणा दी। हरिजन बस्ती में जाकर भजन, कीर्तन, पुस्तक पाठ करना हमेशा का कार्यक्रम रहता था। "हिन्द महिला समाज" का पुस्तकालय भी अवन्तिकाबाई के प्रयत्न से निरन्तर प्रगति करता चला गया, जिसके परिणाम स्वरूप आज उसकी गिनती बम्बई के बहुत बड़े पुस्तकालयों में की जाती है।"

जो लोग देश सेवा और समाज-हित के कार्यों में अपना जीवन अर्पण कर देते हैं, लोग उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए किसी प्रकार का स्मारक निर्माण करने की योजना बनाते हैं। पर अवन्तिकाबाई "हिन्द महिला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



समाज" के रूप में एक ऐसी परोपकारिणी संस्था की स्थापना कर गई है कि वह जब तक कायम रहेगी उसके लिए एक बहुत उत्तम 'स्मारक' का काम करती रहेगी। 'समाज' के स्थायित्व और सुचारु संचालन के लिए उन्होंने कितना परिश्रम किया यह निम्न उद्धरण से विदित हो सकता है—

"अपने जीवन के अन्तिम १७ सालों में अपने राजनीतिक जीवन और अन्य कार्यों से निवृत्त होकर वह 'समाज' के कार्यों में ही विलीन हो गयी थीं। उनके अथक परिश्रम से ही 'समाज' को आज गौरव पूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। 'समाज' के लिए आश्रयदाता ढूँढ़ना दान प्राप्त करके फण्ड जमा करना आदि कार्य वे ही करती थीं। श्रीमती सोफिया वाडिया, यमुना बाई आपटे और उन स्वयं के पति श्री बबनराव गोखले ने हजारों रुपया दान स्वरूप देकर 'समाज' की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाया। २०० रु० से अधिक देने वाले आश्रयदाता १०० से अधिक देने वाले आजीवन सदस्य, और ५ से ५० रु० तक चन्दा देने वाले अन्य सदस्यों की संख्या अनगिनती थी। इस प्रकार स्त्री-पुरुषों के सहयोग से 'समाज' की उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई।"

हमारी उच्च और मध्यम श्रेणी के घरों की जो महिलायें अपना समय अनेक प्रकार की निरर्थक बातों या फैशन और सजावट आदि में गँवाया करती हैं, अथवा आलस्यवश 'सोफा-सेटों' पर पड़ी रहती हैं, और शिकायत करती रहती हैं, कि उनके करने के लिए कोई काम ही नहीं है, वे अवन्तिका बाई के उदाहरण से शिक्षा ग्रहण कर सकती हैं। उनको समझ लेना चाहिये। कि आलस्य में पड़े रहना और समय गँवाना कोई सौभाग्य की बात नहीं है। जो पुरुष या स्त्रियाँ इस प्रकार के जीवन को बड़प्पन का चिन्ह समझते हैं, वे बड़ी भूल में हैं। भगवान ने यह शरीर और धन, सम्पत्ति आदि अन्य साधन कुछ उपयोगी कार्य करने के लिए ही दिये हैं। जो इस ईश्वरीय विधान का उल्लंघन करता है वह कभी सच्चा सुख नहीं पा सकता। यों तो ना समझ और कुबुद्धि वाले शराब, अफीम, भांग आदि जैसे दुर्व्यसनों में भी आनन्द मानते हैं, पर इनका जो अन्तिम परिणाम होता है वह किसी से छिपा नहीं है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


इस लिए बुद्धिमान और अपना कल्याण चाहने वाला उसी को कहा जा सकता है जो अपने साधनों तथा सामर्थ्य को श्रेष्ठकार्यों में खर्च करे। अवन्तिका बाई का जीवन इसके लिए बड़ा प्रेरणाप्रद है। हमारे यहाँ की स्त्रियाँ किसी सार्वजनिक सेवा का प्रश्न उठने पर प्रायः घर बार की जिम्मेदारियों या सामाजिक परम्पराओं का बहाना पेश कर देती हैं। अवन्तिकाबाई भी अगर चाहती तो अपने पति और अपनी आमदनी से बंगलों और कोठियों में रहने वालों की तरह आराम और फैशन का जीवन बिता सकती थी। पर उसने समझ लिया कि जो लोग केवल इन बातों में ही लगे रहकर समाज का और विशेषतः दीन दुःखी जनों का कुछ भी हित साधन नहीं करते उनका जन्म व्यर्थ ही जाता है। यही सोच कर उन्होंने अपने सब साधन परोपकार और सेवा कार्यों में लगा दिये जिसके लिए आज तक उनका नाम सम्मान के साथ लिया जाता है।

## खादी प्रेम और प्रचार के लिये उद्योग—

ऊपर लिखा जा चुका है कि अवन्तिकाबाई द्वारा स्थापित "हिन्द महिला समाज" में कताई और बुनाई का काय भी होता था और अवन्तिका बाई उसमें स्वयं भाग लेती थीं। पर उन्हें ने खादी को तुरन्त ग्रहण नहीं कर लिया। क्योंकि उनका स्वभाव किसी की नकल करना नहीं था, वरन् प्रत्येक बात के गुण दोषों का विवेचन करके उसके सम्बन्ध में निर्णय करने का था। इस लिये महात्मा गांधी द्वारा खादी प्रचार १९१७ में ही आरम्भ कर दिये जाने पर और अवन्तिकाबाई से उनका निकटवर्ती सम्बन्ध रहने पर भी उन्होंने सन् १९२१ तक खादी पहिनना आरम्भ नहीं किया। एक दिन श्रीमती सरोजिनो नायडू सरला देवी चौधरानी और अवन्तिका बाई गाँधीजी के पास बैठी बातें कर रही थीं। उसी बीच में सरला देवी ने हंसते हुये महात्मा जी से कहा कि 'आप तो अवन्तिकाबाई की बड़ी प्रशंसा किया करते हैं, पर वह खादी तो नहीं पहनती।' महात्माजी ने उत्तर दिया—'अवन्तिकाबाई ऐसे स्वभाव की नहीं कि मेरे कहने से ही वह सब कुछ करने लगे। जब तक खादी की महिमा उसे प्रतीत न होगी तब तक वह खादी नहीं पहिनेंगी। पर विश्वास रखो कि जिस दिन वह श्रद्धा के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


साथ खादी को स्वीकार करेगी, तो आखिरी दम तक उसका त्याग नहीं करेगी ।'

इसके कुछ समय पश्चात् ही आंध्र का दौरा करते हुए महात्मा जी को हाथ से कते बहुत बारीक सूत की एक साड़ी भेंट में मिली । वह उन्होंने अवन्तिका बाई को दे दी । जब उसने देखा कि चर्खा पर इतना बढ़िया सूत काता जा सकता है तो उसे एक नवीन प्रेरणा मिली और उसने स्वयं सूत कातना आरम्भ कर दिया । कुछ समय बाद उसने अपने हाथ के सूत की बनी साड़ी पहन ली और पहले की रखी सब सूती और रेशमी साड़ियाँ गरीबों को दे दीं ।

अपने हाथ की खादी की साड़ी पहिनने के साथ ही उन्होंने यह भी निश्चय किया कि वह अपने हाथ के सूत की बनाई दो धोतियां गांधीजी को उनके जन्म-दिवस पर अर्पण किया करेंगी । उनका यह संकल्प अन्तिम समय तक स्थिर रहा । सन् १९४२ में जब गांधी जी पूना में कैद थे तब भी उसने उनके पास भेंट की धोतियां भेजने का निश्चय किया । जब बम्बई के पुलिस कमिश्नर ने इसकी अनुमति देने से इनकार कर दिया तो अवन्तिकाबाई ने उनको रजिस्टर्ड डाक से जेलखानों के इन्सपेक्टर जनरल कर्नल भंडारी के पास भेज दिया और लिखा कि "गाँधीजी के जन्म-दिवस पर दो धोतियाँ देने का मेरा व्रत है । कृपया इन्हें उनके पास पहुंचा दें । "कर्नल भंडारी ने उस समय तो कोई उत्तर न दिया, पर २ अक्टूबर को वे स्वयं धोतियाँ लेकर गांधी जी के पास पहुंचे और हँस कर कहने लगे "बताइये, मेरी बगल में क्या है ?" गांधी जी ने तुरन्त उत्तर दिया—"यह तो अवन्तिकाबाई का प्रसाद मालूम होता है ।" इसके पश्चात् कर्नल भंडारी ने अवन्तिका बाई को धोतियाँ पहुंचा देने की सूचना दी, तो उन्हें बड़ा हर्ष हुआ ।

## बम्बई कारपोरेशन में सेवा कार्य—

सन् १९२३ में अवन्तिका बाई बम्बई कारपोरेशन की सदस्या नियुक्त की गई और आठ वर्ष तक वे वहाँ रह कर जनता के हित के विभिन्न कार्य करती रहीं । उन्होंने देखा कि बालकों के स्कूलों में जो खोंचा वाले खाने पीने की चीजें बेचते हैं वे प्रायः अशुद्ध और हानिकारक होती हैं । इस लिए उन्होंने कार्पोरेशन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



में प्रस्ताव रखा कि उनको स्कूल के भीतर न आने दिया जाय, क्योंकि इससे अनेक बार कठिन बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं । अन्य सदस्यों ने भी इसकी युक्तियुक्तता को समझा और प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हो गया । इसी प्रकार चौपाटी पर खोंचे वालों के कारण बड़ी गन्दगी रहती थी । उनको रोकने को अवंतिकाबाई ने प्रस्ताव किया । पर कई सदस्यों के समझाने से उन्होंने उसे वापस ले लिया । उन्होंने बम्बई नगर में कई जच्चाखाने खुलवाये और ऐसी व्यवस्था की कि उनसे गरीब वर्ग की महिलाएं विशेष रूप से लाभ उठा सकें । गिरगाँव के जच्चाखाने के विषय से अनेक शिकायतें सुनने में आती थीं । अवंतिकाबाई ने स्वयं उनकी जांच पड़ताल करके उनको दूर कराया ।

अवंतिकाबाई को मातृ भाषा के गौरव का भी सदा ध्यान रहता था । इस लिये जब उन्होंने देखा कि कार्पोरेशन के विधान में अंगरेजी में ही भाषण करने का कोई नियम नहीं है, तो उसकी बैठकों में मराठी में ही भाषण करना आरम्भ कर दिया । यह देखकर कई पारसी और गुजराती सदस्यों ने भी अपनी भाषा में भाषण करना आरम्भ किया, जिससे कई सदस्यों को उनके समझने में कठिनाई होने लगी । कुछ समय बाद कार्पोरेशन के अध्यक्ष श्री जोसेफ बैप्टिस्ट चुने गये । उनका अवंतिकाबाई के साथ स्नेह पूर्ण सम्बन्ध था और वे जानते थे कि वह अच्छी तरह अंगरेजी बोल सकती है । इसलिये उन्होंने अवंतिका बाई से अंगरेजी में ही बोलने का आग्रह किया । एक बार तो अवंतिकाबाई ने यही उत्तर दिया कि मराठी में बोलने का उनका अधिकार है । पर जब बैप्टिस्ट साहब ने हँसते हुये उनमें कहा— "यू मस्ट रेसपेक्ट दि चेयर" (अर्थात् आपको अध्यक्ष की बात का आदर करना चाहिये) तो उन्होंने अधिक हठ न की और तब से बराबर अंगरेजी में ही भाषण करती रहीं ।

जब उन्हें स्थायी समिति का सदस्य नियुक्त किया गया, तो नियमानुसार प्रत्येक बैठक का ३०) भत्ता मिलने लगा । पहली बार जब इसके लिये उनके पास ३०) चैक आया तो वे उसे लेकर विट्ठलभाई पटेल के पास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



गई और रुपया लेने से इनकार किया। बिट्ठल भाई ने उनको समझाया कि सर जमशेदजी जीजीभाई जैसे करोड़पति भी भत्ता का रुपया ले लेते हैं, तब आप उसे अस्वीकार क्यों करती हैं ? आप उसका उपयोग किसी भी अच्छे काम में कर सकती है। इस पर अवंतिकाबाई रुपया लेकर उसे किसी सार्वजनिक संस्था को दान कर देने लगीं।

स्वदेशी-प्रेम से प्रेरित होकर अवंतिका बाई ने यह प्रस्ताव पास कराया कि म्युनिस्पल स्कूलों में तकली पर सूत कातना सिखाया जाय। नियमानुसार इस स्कूल कमेटी में विचारार्थ भेज दिया गया। दूसरा प्रस्ताव वह रखा कि कार्पोरेशन के सब कर्मचारी स्वदेशी वस्त्र व्यवहार करें। अवंतिका बाई जानती थी कि कर्मचारियों से इसका पालन करा सकना बहुत कम सम्भव है, तब भी जब वह कुछ संशोधनों के साथ पास हो गया तो उनको बड़ी प्रसन्नता हुई, क्योंकि इस प्रकार कार्पोरेशन ने स्वदेशी का सिद्धान्त स्वीकार कर लिया, जो अंगरेजी शासन के जमाने में एक कठिन बात थी।

कार्पोरेशन में योग्यतापूर्वक कार्य करने का एक परिणाम यह हुआ कि सरकार की तरफ से उनको जे० पी० की उपाधि देकर आनरेरी मैजिस्ट्रेट बनाने का निर्णय किया। पर अवंतिका बाई जानती थी कि चाहे यह कार्य बिना वेतन के (आनरेरी) ही किया जायगा, तो भी उन्हें सरकारी नियमों का पालन करना ही पड़ेगा और वे राष्ट्रीय आन्दोलन के कार्य स्वतंत्रता पूर्वक न कर सकेंगी। इस लिये उन्होंने बम्बई के पुलिस कमिश्नर मि० केली को लिख भेजा कि वे इस सम्मान को स्वीकार करने में असमर्थ हैं।

बम्बई कारपोरेशन भारत की सबसे बड़ी नगरपालिका थी, जिसकी आय और खर्च करोड़ों का था। इस लिये जो लोग उसके सदस्य चुन लिये जाते थे वे अपने को बड़ा सौभाग्यशाली समझते थे और किसी न किसी रूप में उसका लाभ उठाते ही थे। पर अवंतिका बाई ने अपनी सदस्यता के आठ वर्षों में जितने प्रस्ताव पेश किये और वक्तव्य दिये वे सब जन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



सेवा की भावना से ही होते थे। जिस प्रकार अन्य सदस्य अपने सम्बन्धियों या मित्रों की सिफारिशें लेकर उच्च अधिकारियों के पास जाते हैं, वैसा उन्होंने कभी नहीं किया। किसी अवसर पर म्युनिस्पल कमिश्नर मि० क्लेटन ने अपने भाषण में यह कहा कि "इस कार्पोरेशन का एक भी सदस्य ऐसा नहीं है, जो किसी न किसी सिफारिश के साथ मेरे पास न आया हो।" यह सुनते ही अवंतिकाबाई इसका प्रतिवाद करने को खड़ी हो गईं। तब क्लेटन साहब ने कहा—'अवंतिकाबाई, आप ही एक अपवाद हैं।' क्लेटन साहब ने एक अन्य अवसर पर भी कार्पोरेशन की बैठक में कहा था.—'अवंतिकाबाई के कारण यहाँ का वातावरण गम्भीर रहता है और समस्त चर्चा ऊंचे दर्जे की होती है। उनकी ईमानदारी और स्पष्टता लाजवाब है।'

यद्यपि काँग्रेस के कानून भङ्ग आंदोलन में भाग लेने और ६ महीने की सजा दिये जाने के आधार पर सन् १६३१ में अवंतिकाबाई को कार्पोरेशन की सदस्यता से हटा दिया गया, पर उसके सदस्य तथा अधिकारी सदैव उनका आदर करते रहे। सन् १६४६ में उनका देहान्त हो जाने पर उसके अध्यक्ष डा० भास्करेन्हास ने शोक-प्रस्ताव उपस्थित किया। स्थायीसमिति और स्वास्थ्य-समिति ने शोक के प्रस्ताव पास किये। इस प्रकार अवंतिकाबाई ने अपने व्यावहारिक आचरण से यह सिद्ध कर दिया कि यदि हम ईमानदारी और सचाई से काम लें तो हमारे विरोधियों को भी हमारी प्रशंसा करनी पड़ेगी।

## राष्ट्रीय आन्दोलन में जेल जाना—

जब कांग्रेस ने पूर्ण-स्वाधीनता का प्रस्ताव पास कर दिया और २६ जनवरी सन १६३० को समस्त भारत में "स्वतंत्रता-दिवस" बड़े जोर-शोर से मनाया गया, तो देश में एक नई रंगत दिखलाई पड़ने लगी। प्रत्येक नगर में तिरंगा झंडा लिये राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं तथा स्वयं सेवकों के दल फिरते हुये नजर आते थे और पुलिस वाले लाठियाँ लेकर उनके पीछे फिरते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



यह वह जमाना था जब पं म० मदन मोहन मालवीय, पं० मोतीलाल नेहरू, मौलाना आजाद, सरोजिनी नायडू, कमलादेवी चट्टोपाध्याय जैसे अखिल भारतीय नेता जलूसों में शामिल होकर पुलिस की लाठियों का सामना करते थे । पुरुष ही नहीं स्त्रियाँ और लड़कियाँ भी हजारों की संख्या में जलूसों में भाग लेती थीं और पुलिस की मार तथा जेल की सजा को सहन करके भी पीछे कदम नहीं टाती थीं । बम्बई इस दृष्टि से बहुत आगे बढ़ा-चढ़ा था । वहां सरकारी आदेशों का उल्लंघन करके बहुत बड़े-बड़े जलूस हमेशा निकाले जाते थे और पुलिस के कठोर दमन के होने पर भी लोग हिम्मत नहीं हारते थे ।

अवंतिका बाई बम्बई के कांग्रेस आन्दोलन की एक प्रमुख नेता थी ७ अप्रैल १९३० को जब प्रथम बार नमक-कानून तोड़कर सत्याग्रह किया गया तो उस जलूस में अवंतिका बाई भी अनेक सत्याग्रही महिलाओं के साथ उपस्थित थीं । इन वीरांगनाओं को देखने के लिये पहले से ही महा-लक्ष्मी के मैदान में दस हजार व्यक्तियों की भीड़ इकट्ठी हो गई थी । इसके पश्चात् चौपाटी की सभा में भी अवंतिकाबाई ने भाषण करते हुए महाराष्ट्र की वीरता का परिचय देकर जनता को आन्दोलन में अधिकाधिक भाग लेने की प्रेरणा दी । ४ मई को जब गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया तो बम्बई में एक दिन के बजाय तीन दिन हड़ताल रखी गई । श्रीमती सरोजिनीनायडू की अध्यक्षता में जो सार्वजनिक सभा हुई उसमें अवंतिकाबाई ने विदेशी कपड़ों के बहिष्कार पर जोर दिया और दूसरे दिन से ही विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर पिकेटिंग शुरू कर दी गई । सैकड़ों स्वयं सेविकायें प्रमुख कपड़ा मार्केटों के सामने खड़े होकर लोगों को उनके खरीदने से रोकने लगीं ।

कुछ समय बाद लोगों का उत्साह बढ़ाने के लिये शराब की दुकानों पर भी पिकेटिंग की जाने लगी । यह कार्य कुछ खतरनाक भी था क्योंकि शराबी और शराब बेचने वालों में भले आदमियों की संख्या बहुत कम होती है । फिर भी अवंतिकाबाई ने श्रीमती हंसा मेहता और अन्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



स्वयंसेवकों को लेकर बम्बई के सबसे बदनाम मुहल्ले भिण्डी बाजार की एक शराब की दुकान पर पिकेटिङ्ग आरम्भ कर दी। इस समय सरकारी आर्डिनेंस के अनुसार पिकेटिङ्ग करना जुर्म हो गया था। पर कुछ सोचकर अधिकारियों ने इनको गिरफ्तार नहीं किया।

जब कांग्रेस के अध्यक्ष पं० मोतीलाल नेहरू बम्बई के "आजाद मैदान" में व्याख्यान देने पहुँचे तो पुलिस कमिश्नर मि० हेली स्वयं सभा भंग करने को वहाँ मौजूद थे। उनके साथ ७०० पुलिस के सिपाही, ५०० सवार और ७५ सार्जेण्ट थे। भीड़ पर उनके हमला करने से सैकड़ों व्यक्ति घायल हुये। उन्होंने अपनी बदनामी से बचने के लिये सब महिलाओं को वहाँ से हट जाने को कहा। पर अवंतिकाबाई ने कहा—"हम यहाँ पर हट जाने के लिये नहीं आई हैं, अपने भाइयों के साथ हम भी यहाँ डटी रहेंगीं। आप चाहें तो हमें घोड़ों से कुचलवा दें।"

इसी प्रकार लोकमान्य तिलक की पुण्य तिथि के अवसर पर जो जलूस निकाला गया और जिसमें मालवीय जी तथा सरदार पटेल भाई भी थे, उसको चौपाटी बन्दर पर रोका गया। कई हजार लोगों ने अपने नेताओं के साथ पूरी रात वहीं पर व्यतीत करदी, पर पीछे न हटे। अवंतिकाबाई भी इसमें थीं, जब पुलिस ने लाठी चार्ज किया तो ५००-६०० व्यक्ति घायल हो गये, पर किसी ने हार नहीं मानी।

अन्त में सरकार ने कांग्रेस कमेटी को ही गैरकानूनी घोषित कर दिया और कांग्रेस आफिस पर पुलिस का पहरा बैठा दिया गया। पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने हजारों घरों पर 'कांग्रेस-कार्यालय' का साइन बोर्ड लगा दिया और ज्योंही एक अध्यक्ष गिरफ्तार किया जाता कि दूसरा अध्यक्ष आकर उसका काम सँभाल लेता। जब बारह अध्यक्ष गिरफ्तार कर लिये गये तो अवंतिका बाई तेरहवीं अध्यक्ष बनीं। उस समय कोई खास कार्यक्रम सामने न था। कांग्रेस कमेटी के साथ उसका झंडा भी गैर कानूनी करार दे दिया गया। इसलिये अवंतिकाबाई के आदेशानुसार बहुसंख्यक राष्ट्रीय स्वयं सेवक सार्वजनिक स्थानों में 'झंडाभिवादन' करते हुये जेल चले गये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



## देशभक्त दम्पति—

महात्मा गाँधी ने अवंतिका बाई से कहलाया था कि उसके पति बबनराव हाथ कट जाने से असहाय हैं, उनको सदैव सहायता की आवश्यकता रहती है, इसलिये उन्हें जेल नहीं जाना चाहिये। पर जब वह युद्ध-समिति की अध्यक्ष चुनली गई तो उनके सामने यह समस्या आई कि अब क्या किया जाय? पर बबनराव ने स्वयं उसे जेल जाने का आदेश देकर कहा कि वह उनकी जरा भी चिन्ता न करें, वे अपनी व्यवस्था स्वयं अच्छी तरह कर सकते हैं।

२६ अक्टूबर को अवंतिकाबाई अपने कुछ सहकारियों को लेकर जिनमें अधिक संख्या महिलाओं और लड़कियों की ही थी, आजाद मैदान में पहुँची। पुलिस ने उस पर पहले ही अधिकार कर रखा था। सारजेंण्टों ने उनके हाथ से झण्डा छीनने की बहुत कोशिश की पर वे सफल न हो सके। हजारों व्यक्तियों के सम्मुख झंडाभिवादन करके तथा स्वयं सेवकों तथा स्वयं सेविकाओं को सलामी लेकर वह घर चली गई। इसके बाद अन्य सब लोग अपने झण्डे फहराने लगे। पुलिस वाले झण्डे छीनते रहे और नये-नये झण्डे निकलते रहे। सार्जेण्टों ने अनेक स्वयंसेविकाओं को लारी में भर कर कई मील दूर ले जाकर एक जंगल में छोड़ दिया। वहाँ से बहुत रात बीत जाने पर वे बम्बई वापस आईं। उसी दिन शाम को एक मजदूर सभा को भंग करने के लिये पुलिस ने लाठी चार्ज किया। अवंतिका बाई ने पुलिस की बर्बरता के विरुद्ध एक वक्तव्य उसी समय समाचार पत्रों में निकलवाया।

दूसरे दिन दोपहर के बाद एक पुलिस अफसर अवंतिका बाई को गिरफ्तारी का वारंट लेकर उनके घर पहुँचा। वहाँ पर उपस्थित बबनराव ने कहा कि वह कार्पोरेशन गई हैं। पुलिस वाले ने समझा कि वह उसे बहका रहे हैं, इसलिये उसने पूरे मकान की अच्छी तरह तलाशी ली। जब वहाँ वे न मिली तो कार्पोरेशन में रात के आठ बजे उनको गिरफ्तार किया गया।

२८ अक्टूबर को ही अवंतिका बाई के मुकदमे का फैसला कर दिया गया। अवंतिका बाई ने अपने बचाव में कुछ भी कहने से इनकार किया। इस पर मजि-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


स्ट्रेट ने उन्हें ६ मास की कैद और ४०० रु० जुर्माना की सजा दी। पर अवंतिका बाई ने जुर्माना देने के बजाय तीन महीने की सख्त कैद के दण्ड को पसन्द किया। इस प्रकार उनको कुल नौ मास की सजा दी गई। वह इस अवसर पर खूब प्रसन्न थीं और उन्होंने कहा—"जिस जेलखाने में भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ और जिसमें आज जगत पूज्य महात्मा जी बन्द हैं, उस पवित्र स्थल में जाकर मैं एक अपूर्व आनन्द का अनुभव कर रही हूँ। बिलायती कपड़ों तथा शराब की पिकेटिङ्ग का कार्य महात्मा जी ने विशेष रूप से स्त्रियों के सिपुद किया है। हमारा कर्तव्य है कि हम उस कार्य को अच्छी तरह पूरा करें और प्रतिदिन एक घण्टा सूत भी काता करें।"

अवंतिकाबाई को यरवदा जेल भेजने की आज्ञा दी गई। बबनराव उस समय उपस्थित थे। यद्यपि वे पिछले ३० वर्षों में कभी पृथक नहीं हुये थे, पर इस समय देश की पुकार को ध्यान में रखकर उन्होंने बिना किसी प्रकार के विषाद के इस निर्णय को स्वीकार किया। वास्तव में समाज सेवा और राष्ट्र सेवा का महत्त्व व्यक्तिगत सुख-सौख्य की अपेक्षा कहीं अधिक है और जब ऐसा अवसर आये तो देश, धर्म और समाज को प्रधानता देना ही हम सबका आदर्श होना चाहिये।

इसके पश्चात् लाड इरविन के साथ गाँधी जी का समझौता हो जाने से सभी राजनैतिक कैदियों को छोड़ दिया गया और अवंतिका बाई को लगभग ४॥ महीना ही जेल में रहना पड़ा। बाहर आने पर रचनात्मक कार्यक्रम में उनकी आवश्यकता समझी गई और महात्मा जी ने खादी और साक्षरता के प्रचार का काम विशेषरूप से उनके सिपुर्द किया। इसलिये विभिन्न स्थानों में महिलाओं की गोष्ठियाँ करके खादी के लाभ समझाया करती थीं। साक्षरता का कार्यक्रम वे पूर्ववत् "हिन्द महिला-समाज" के माध्यम से करती रहीं। पर सन् १९३२ में लार्ड विलिङ्गडन की नीति के कारण सत्याग्रह आन्दोलन पुनः उठाया गया। गाँधीजी को तो विलायत में होने वाली "राउण्ड टेबिल कान्फ्रेंस" से लौटते ही गिरफ्तार कर लिया गया और ४ जनवरी १९३३ को ही एक आर्डिनेंस निकाल कर कांग्रेस को फिर गैर कानूनी संस्था घोषित कर दिया गया। इसके बाद देशभर के प्रमुख कार्यकर्ता धड़ाधड़ गिरफ्तार किये जाने लगे। अवंतिकाबाई को भी अपनी गिर-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



फतारी का अनुमान हो गया था। इसलिये उन्होंने अपने पति बबनराव की सब व्यवस्था ठीक कर दी। और जैसे ही पुलिस की गाड़ी उन्हें गिरफ्तार करने आयी वे तुरन्त चलने को तैयार हो गईं।

इस बार वे नजरबन्द के रूप में दो महीने तक जेल में रखी गईं उसके बाद नजरबन्दों को एक शर्तनामे पर दस्तखत कराके छोड़ देने का आदेश था। पर उसकी शर्तें ऐसी खराब थीं कि कोई सच्चा कार्यकर्ता उसके लिये तैयार नहीं होता था। पर अवंतिका बाई को बिना किसी शर्त के ही रिहा कर दिया गया। इस प्रकार इस देशभक्त दम्पति ने अपने सुख-दुःख या विछोह की चिन्ता न करके राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य का यथोचित रूप से पालन किया। उनका कार्य निस्सन्देह अनेक दम्पत्तियों के लिये प्रेरणादायक है।

## पति की बीमारी के कारण कार्यक्रम में परिवर्तन—

पर सन् १९३३ में बबनराव को हृदय की बीमारी हो गई। इसका आक्रमण आकस्मिक रूप से होता है, इसलिये अवंतिकाबाई का उनसे थोड़ी देर भी अलग रहना ठीक न था। इस कारण राजनैतिक आन्दोलन में भाग लेना असंभव हो गया और महात्मा जी ने भी उन्हें स्पष्ट रूप से जब तक पति स्वस्थ न हो जाये पूर्ण रूप से उसकी सेवा में लगे रहने का आदेश दिया। यही कारण था कि सन् १९३७ में देश में कांग्रेसी-सरकार कायम होते समय श्रीमती सरोजिनी नायडू के बहुत जोर देने पर भी वे विधान सभा की सदस्यता के लिये खड़ी न हुईं। आगे चलकर १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रह और सन् १९४२ के "भारत छोड़ो" आन्दोलन में भी भाग न ले सकीं इसके बाद वे १५ वर्ष तक पति की पूरी तरह से देखभाल ही करती रहीं।

पर इसका अर्थ यह नहीं कि उन्होंने सार्वजनिक कार्य को छोड़ दिया। महात्मा जी ने उनको खादी और साक्षरता प्रचार का आदेश दिया था, इसे वे 'हिन्द महिला समाज" के माध्यम से बराबर करती रहीं। 'समाज' का कार्यालय एक प्रकार से उनके घर पर ही था। अपनी परिस्थिति को समझकर वे ऐसी व्यवस्था करने लगीं जिससे धन अथवा कार्यकर्त्रियों के अभाव से उसके मार्ग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


में रुकावट न पड़े। इसके लिये उन्होंने बहुत से नियमित आर्थिक सहायता देने वाले तैयार किये और बहुत-सी योग्य महिलाओं को "समाज" का कार्य संचालन करने के लिये प्रशिक्षित किया।

पर "समाज" का कार्य करते हुये उन्होने अपने को अधिकार और यश की लालसा से सदा दूर रखा। वे उसकी व्यवस्था कैसे करती हैं, और उन्हें इसके लिये कितना परिश्रम करना पड़ता है इसकी चर्चा वे कभी किसी के सामने नहीं करती थीं। एक निष्काम कर्मयोगी की तरह वे चुपचाप अपना कर्त्तव्य पालन करके अलग हट जाती थीं और कार्य का यश दूसरों को ही देना पसन्द करती थीं।

## बीमारी और अन्तिम जीवन—

अवंतिका बाई का स्वास्थ्य पहले काफी अच्छा था और उसी के आधार पर वह राष्ट्रीय और महिला आन्दोलनों में बहुत अधिक परिश्रम करके उनको सफल बना सकीं थीं। पर जेल-जीवन का उनके स्वास्थ्य पर बहुत खराब प्रभाव पड़ा। वह घर गृहस्थी में रहने वाली और स्वास्थ्य के नियमों के अनुसार चलने वाली स्त्री थीं। जेलखाने के कठोर नियमों तथा वहाँ के अस्वास्थ्यकर खान-पान ने उनके स्वास्थ्य को सदा के लिये खराब कर दिया। डाक्टरों की सलाह से वह स्वास्थ्य-सुधार के लिये कुछ समय के लिये काश्मीर भी गईं, पर बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य फिर पूर्ववत् दशा में न आया।

सन् १९४७ में जब उनकी तबियत अधिक खराब रहने लगी तो बड़े चिकित्सकों से सलाह ली गई। मालूम हुआ कि उनको कैंसर का रोग हो गया है, जो असाध्य माना जाता है। अवंतिका बाई ने इसकी भी अधिक चिन्ता न की और होनहार को अनिवार्य समझ कर अपने कार्य में लगी रहीं। अब वह ज्यादा चल-फिर तो नहीं सकती थी, पर बैठे-बैठे ही "हिन्द महिला-समाज" का काय करती रहती थीं। इसी समय बयनराव पर लकवा का आक्रमण हुआ जिससे उनकी दशा बहुत ही शोचनीय हो गई। अवंतिका बाई अपनी बीमारी को भूल कर रात-दिन उनकी सेवा में संलग्न रहने लगीं। उनकी सेवा-परि-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



चर्या से बबनराव का प्राण-संकट टल गया और वे स्वस्थ हो गये । पर इस प्रकार बीमार होते हुए भी अतिरिक्त श्रम करने से अवंतिका बाई की हालत खराब हो गई और फिर उसी बीमारी में उनका अन्त हो गया ।

पर कैंसर जैसी घातक बीमारी में ग्रसित होने पर भी उनको अपने नियम तथा कर्त्तव्य का कितना ध्यान था, इसका पता इस बात से चलता है कि उस दशा में भी उन्होंने महात्मा जी के जन्म दिवस पर सदा की तरह दो धोतियाँ भेजने की पूरी चेष्टा की । उन्होंने सूत तैयार करके बुनने को भी दिया, पर धोतियाँ २ अक्टूबर तक न आ सकीं । महात्मा जी उस समय दिल्ली में थे, इसलिये उन्होंने वहीं पर पत्र भेज कर इस त्रुटि के लिये क्षमा-प्रार्थना की और अपनी बीमारी का हाल भी लिखा । महात्मा जी ने उस पत्र के उत्तर में कहा— "तुम्हें कैंसर कहाँ से हुआ । मुझे तो तुम्हारे पत्र से ही यह समाचार मालूम हुआ । क्या वह ठीक हो सकता है ? पत्र द्वारा मुझे पूरी जानकारी देना । अब धोती भेजने का मोह क्यों करती हो ? तुमने तो बहुत वर्षों तक इस व्रत का पालन किया । अब यह मोह छोड़ दो ।"

इसके चार महीने बाद ही दिल्ली में महात्मा जी की हत्या कर दी गई । अवंतिकाबाई पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ा । उसे अपना जीवन निःसार प्रतीत होने लगा । जहाँ गांधी जी जैसे विश्व-हित के उपासक के प्रति ऐसा वीभत्स व्यवहार किया जा सकता है, वैसी दुनिया में रहने से ही क्या लाभ ? उन्होंने अपनी दवा करनी भी छोड दी और यह कामना करने लगी कि मृत्यु शीघ्र ही आकर इस नश्वर जीवन का अन्त कर दे । मृत्यु के कुछ दिन पहले तो उनकी यह हालत हो गई कि कभी-कभी एकाएक चिल्ला उठती 'बापू मुझे बुला रहे हैं ।" इस पर बबनराव उनसे कहते कि "बापू जी ने हम दोनों को हमेशा साथ देखा है । वह तुम्हें अकेली कैसे बुलायेंगे ?" अवतिकाबाई कहती— "हाँ, यह भी ठीक है, लेकिन मेरे जाने के बाद कुछ महीनों में आप भी वहाँ आजायेंगे ।" इसी प्रकार की भावना करते-करते २६ मार्च १९४९ को उनका देहावसान हो गया ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


## अवंतिकाबाई की विशेषताएँ—

यद्यपि महात्मा गाँधी के आन्दोलन ने लाखों व्यक्तियों के जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन कर दिये थे, पर स्त्रियों में अवंतिकाबाई जैसे उदाहरण थोड़े ही थे। आरम्भ में उनका जीवन धनी श्रेणी की किसी महिला से ही मिलता-जुलता था। वह रेशमी और महीन साड़ियाँ पहिनती थीं और अँगरेजी ढंग का रहन-सहन रखती थीं। पर सन् १९१७ में गाँधी जी के सम्पर्क में आते ही उनकी एक प्रकार से कायापलट हो गई। वैसे तो गाँधी जी की विचारधारा तथा कार्यों का विवरण समाचार पत्रों में पढ़ कर वे उनके प्रति श्रद्धालु बन गई थीं और अपने को उसी ढाँचे में ढालने की चेष्टा करने लगी थीं। यही कारण था कि गाँधी जी भी उनके प्रति बहुत शीघ्र आकर्षित हो गये और उन पर पूरा विश्वास करने लग गये।

अवन्तिकाबाई ने केवल खादी और सत्याग्रह के विषय में ही गाँधी जी का अनुसरण नहीं किया, वरन् वह निजी जीवन में भी उनके पद चिन्हों पर चलना चाहती थीं। जब बबनराव की आयु ५० वर्ष की हो गई तो अवन्तिकाबाई ने उनसे प्रस्ताव किया कि "अब हम दोनों ब्रह्मचर्य का पालन करें।" बबनराव ने कहा कि "५० वर्ष की आयु कोई ऐसी नहीं होती कि मनुष्य वैवाहिक-जीवन की प्रवृत्तियों का त्याग कर दे।" अवन्तिकाबाई ने उन्हें समझाया कि गाँधी जी तो ३५ वर्ष की आयु से ही ब्रह्मचर्य का पालन करने लग गये थे। आपको ५० वर्ष की आयु में तो कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिये। विलायत में शराब पीने की आदत को जब आपने सहज में ही छोड़ दिया था, तो इस तरह का संयम रखना आपके लिये साधारण बात है।" अन्त में बबनराव भी उससे सहमत हो गये और वे घर में भाई बहिन की तरह रहने लगे।

अवन्तिका बाई एक नये विचारों की स्त्री थी, और धार्मिक अन्धविश्वासों से सर्वथा दूर ही रहती थी, पर पति सेवा के मामले में वह अन्त समय तक पुराने आदर्श की ही अनुयायी बनी रही। उसके पति के दोनों, हाथ पूर्वावस्था में ही जाते रहे थे, पर उसने उनकी आवश्यकताओं की सदैव इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



प्रकार पूर्ति की कि बबनराव को कभी अपनी असहाय अवस्था का ख्याल नहीं आया। वह उनके छोटे-बड़े सभी कामों, को पहले से ही पूरा कर रखती थी, और इसके लिये अपने स्वास्थ्य का भी ख्याल नहीं रखती थी। पति के सम्बन्ध में वह इतनी भावुक थी कि उससे सम्बन्धित सभी परम्परागत रूढ़ियों का वह पालन करती रहती थी। महाराष्ट्र की सुहागिन स्त्रियों में काले काँच के दानों की एक माला गले में पहिनने का रिवाज है। इस सुहाग चिन्ह का वह मरते समय तक परित्याग न कर सकी। जेल जाते समय वहाँ के कर्मचारी तमाम गहने उतरवा देते हैं। इस सुहाग-चिन्ह को भी वे किसी के पास शेष नहीं रहने देते। इस बात को समझ कर अवन्तिकाबाई ने केवल पाँच दानों की छोटी-सी माला बना कर छुपा कर रखली थी। इस प्रकार पति प्रेम के वशीभूत होकर उन्होंने सत्यवादिता के नियम की भी अवहेलना करदी और अपनी इस कमजोरी को महात्मा जी के सामने स्वीकार भी कर लिया।

हो सकता है कुछ लोग इसे वास्तव में अवन्तिकाबाई की दुर्बलता और रूढ़िवादिता ही समझें, पर जीवन में ऐसे भी प्रसङ्ग आते हैं जब मनुष्य जान-बूझ कर भी एकाध त्रुटि कर देता है। पर इसका सम्बन्ध व्यक्तिगत जीवन से होता है और वह एक ऐसा गुप्त और पवित्र रहस्य होता है, जिसे प्रायः दूसरों के समक्ष प्रकट भी नहीं किया जाता। समाज की उससे कोई हानि लाभ नहीं होती। इस काले दानों की माला वाली बात को यदि अवन्तिकाबाई आत्म-शुद्धि की दृष्टि से अपने "गुरू" महात्मा गाँधी से न कहती तो कभी उसकी चर्चा भी सुनने में न आती। पर अब जबकि वह किसी प्रकार प्रकाश में आ गई, तब भी हम अवन्तिकाबाई की प्रेम-प्रवणता की प्रशंसा ही कर सकते हैं। ऐसी छोटी-छोटी बातों से व्यक्ति के अन्तरतम प्रदेश का दर्शन हो जाता है।

योरोप-यात्रा के कारण उन्हें हर प्रकार के वातावरण में रहने का अवसर प्राप्त हुआ था। आन्दोलन में भाग लेने के कारण भारतवर्ष के प्रत्येक प्रदेश में भी वे अच्छी तरह घूम चुकी थीं। पर सब प्रकार के लोगों के संसर्ग में आने पर भी वह शाकाहारी ही बनी रहीं। पर उसके पति योरोप और चीन में सात वर्ष रहने के प्रभाव से अन्तिम वर्षों में मांस खाने लगे थे। अवन्तिका-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


बाई ने उनसे कहा कि अगर आप आदेश दें तो मैं आपको मांस का भोजन बना कर भी दे सकती हूँ, चाहे स्वयं कभी उसका व्यवहार न करूँ। पर कुछ समय बाद बबनराव ने स्वयं मांसाहार त्याग दिया और इस सम्बन्ध में अवंतिकाबाई की परीक्षा का कोई अवसर ही नहीं आया।

पर उसके पति-प्रेम सम्बन्धी ये दो-चार उदाहरण अवंतिकाबाई की गम्भीर भावुकता का प्रदर्शन करने के साथ ही उन लोगों की आँखें खोलने वाले हैं जो, विदेशी शिक्षा प्राप्त महिलाओं को एक सिरे से पति की पर्वाह न करने वाली अथवा पतिव्रत से च्युत समझा करते हैं। विदेशों में भी ऐसी बहु-संख्यक महिलायें होती हैं जो कठिन से कठिन प्रसङ्ग आने पर भी पति का साथ देती हैं और अपने प्राणों को अर्पण कर देती हैं। इटली के प्रसिद्ध देशभक्त सेनानायक गैरीबाल्डी की पत्नी युद्ध क्षेत्र में भी सदा उसका साथ देती रही और उसने इसके लिये इतने सङ्कट सहन किये कि उसका देहावसान अल्प आयु में ही हो गया। इसी प्रकार कहा जाता है कि सन् १९१२ में जब "टिटैनिक" नामक सुप्रसिद्ध जहाज बर्फ के पहाड़ से टकरा कर समुद्र में डूब रहा था तो पहले स्त्री और बच्चों को "लाइफ बोटों" ( प्राण बचाने वाली नावों ) में बैठाया गया। एक पति ने अपनी पत्नी को, जो राजी से नाव में नहीं बैठ रही थी, गोद में उठाकर लाइफ बोट में पहुँचा दिया। पर जैसे ही लाइफ बोट चलने को तैयार हुई वह स्त्री उछल कर पुनः जहाज पर आगई और पति से लिपट कर कहने लगी कि आप और मैं जन्म भर एक साथ रहे, तो अब अन्तिम समय में बिछुड़ने की क्या आवश्यकता है? वे चुपचाप अपने कमरे में चले गये और वहीं शांतिपूर्वक उन्होंने सम्मिलित ही जल समाधि ले ली।

अवंतिकाबाई भी इसी श्रेणी के प्रेमिणी महिला थीं। उनके पति जिस प्रकार अपाहिज हो गये थे, उस दशा में अनेक स्त्रियाँ उनकी अवज्ञा करने लग जातीं अथवा स्वच्छन्दता का कोई मार्ग अपना लेतीं। पर अवंतिकाबाई ने इसके विपरीत, जैसे-जैसे दुर्घटना ग्रस्त होकर बबनराव विकलांग होते गये वह उनसे अधिक प्रेम और सेवा करती गईं। ऐसे सच्चे प्रेमी जीव ही निजी परिवार का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



सीमा से आगे बढ़कर समाज और देश के सच्चे सेवक और स्वार्थत्यागी सहायक बनते हैं।

## अनुशासन सम्बन्धी कड़ाई और कर्त्तव्य पालन —

विदेशों के उदाहरणों को देख कर अवंतिकाबाई को अनुशासन का महत्त्व अच्छी तरह समझ में आ गया था और भारतवर्ष की उन्नति के लिये उन्होंने उसका यथाशक्ति प्रयोग भी किया था। 'हिन्द महिला समाज' से सम्बन्धित शिक्षा संस्थाओं तथा अन्य कार्यों में वह सख्ती से ही काम लेती थीं, जिससे अनेक बहिनें असन्तुष्ट भी हो जाती थीं! पर अवंतिकाबाई ने अन्त तक स्वयम् अनुशासन का पालन किया और दूसरों से भी कराया। इसका अन्तिम परिणाम किस प्रकार शुभ सिद्ध हुआ इस सम्बन्ध में उनकी एक प्रमुख सहकारी श्रीमती कमलिनी गोखले ने अपने संस्मरणों में लिखा है—

"सन् १९३७ के जून मास में मैंने पहली बार "हिन्द महिला-समाज में अँगरेजी पढ़ाने के लिये आना आरम्भ किया। इस कारण अवंतिकाबाई के साथ मेरा नित्य का संबन्ध रहने लगा और मैं उनको अपना गुरु मानने लगी। शुरू में मैं आशङ्कित थी, क्योंकि मैंने सुना था कि उनका अनुशासन बहुत कठोर है। किन्तु ज्यों-ज्यों मेरा परिचय बढ़ता गया, मुझे अनुभव हुआ कि अनुशासन के कठोर होते हुये भी वे प्रेम और आत्मीयता का व्यवहार करती हैं।"

"हिन्द महिला समाज के लिये उन्होंने अपनी देह को अन्त तक खपाया। जब उनको कैंसर हो गया तो महिला-समाज सम्बन्धी उनके कार्यक्रम में बाधा पड़ी। पर वे शय्या पर पड़े-पड़े भी "समाज" के कार्यों का निरीक्षण करती रहती थीं। उनकी हालत ज्यादा खराब हो जाने पर उन्हें तलगाँव के अस्पताल में ले जाने का विचार किया गया, क्योंकि वहाँ सब प्रकार की चिकित्सा सम्बन्धी सुविधायें थीं। परन्तु वे जाने को तैयार नहीं हुईं। "समाज" में रहते हुए ही मृत्यु की इच्छा उन्होंने प्रकट की। वास्तव में उनकी ध्येय निष्ठा असाधारण थी।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


बम्बई की एक प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्यकर्त्री श्रीमती सोफिया वाडिया ने भी अपना अनुभव बतलाते हुये यही कहा था कि "वे स्वयं उत्साही और निश्चयात्मक वृत्ति की महिला थीं । अतः अपने सहकारियों से काम लेने में कठोर थीं । किन्तु उनके न्यायप्रिय और दयालु स्वभाव का परिचय उनके सहयोगियों को सदा ही मिलता रहता था ।"

बम्बई के मुख्य-मंत्री श्री बाला साहब खेर ने कहा कि "कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं कि उनकी आकृति से ही देखने वाले पर अनुकूल छाप पड़ती है । अवंतिकाबाई उन्हीं में से एक थीं । "यह कौन है ?" यह जानने की सहज इच्छा होती थी । उनकी वृत्ति शुरू से ही राष्ट्रीय थी । वह चम्पारन गईं और तभी से सार्वजनिक कार्यों में प्रमुख रूप से भाग लेने लगीं । श्री बबन गोखले ने उनके सत्कार्यों में सदैव उनको सहायता की । इन दोनों का मुख्य धन्धा देश सेवा ही था ।"

समाज और व्यक्ति के उत्थान के लिये इन्हीं गुणों की आवश्यकता होती है । यद्यपि हमारे और योरोपियन समाज के रहन-सहन तथा आचार-विचारों में बहुत कुछ अन्तर है,तो भी अनुशासन, कर्तव्य पालन और समाज-सेवा आदि ऐसे गुण हैं, जिनका महत्त्व सर्वत्र एक समान है और जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती । प्राचीन भारत में भी इनकी भावना पूर्ण रूप से मौजद थी, चाहे उसका बाह्य रूप कुछ भिन्न प्रकार का था । उस समय इस देश में कर्तव्य पालन और परोपकार की भावना इतनी प्रबल थी कि अपना प्राण और सर्वस्व त्याग करने से भी लोग पीछे नहीं हटते थे । श्रीमती अवंतिकाबाई में प्राचीन और नवीन भावनाओं का इस प्रकार मिश्रण हुआ था जिससे उनका व्यक्तित्व बहुत अधिक आकर्षक और कल्याणकारी बन गया था । उन्होंने सब प्रकार के सांसारिक प्रलोभनों और तृष्णाओं को त्याग कर अपना तन-मन धन समाज-सेवा और परहित साधन में लगा दिया, और इसके लिये अनेक प्रकार के कष्ट सहन किये और हानियाँ भी उठाईं । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उन्होंने अपने स्वास्थ्य और प्राणों की भी पर्वाह न की ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



वास्तव में अवंतिकाबाई का जीवन प्रत्येक भारतीय स्त्री-पुरुष के लिये मार्ग दर्शक है। जो लोग इन बातों को साधुओं और त्यागियों का ही कर्तव्य समझते हैं वे अवन्तिकाबाई के जीवन से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं कि किस प्रकार उन्होंने अपने गार्हस्थ्य-जीवन की उपेक्षा न करते हुये समाज-सेवा का इतना अधिक कार्य कर दिखाया। अवन्तिकाबाई के पति बबनराव तो संयोग-वश ऐसी स्थिति को प्राप्त हो गये थे कि वे स्वयं समाज द्वारा सेवा किये जाने के अधिकारी थे। पर अपनी उद्योगशीलता और कर्त्तव्य परायणता के आधार पर उन्होंने अपने जीवन को बदल डाला और आजन्म समाज की उपयोगी सेवा करते रहे। जीवन को धन्य और सार्थक बनाने का यही मार्ग है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मुद्रक—युग निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-वृत्तान्त जन मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन कथाओं की अधिकाधिक जानकारी जनकल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन चरित्रों की सीरीज को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिख कर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पै०

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

# : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

**गायत्री परिवार** जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

**Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar**
**Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at**
**www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org**